64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 952 Participant Code: 032

हारना मेरे लिए मंजूर नहीं

"माँ, मुझे न बड़े होने पर एक पैलट बनना है"। रोहन ने अपना सपना उसके माँ से कहा। दस साल का रोहन की सपना सुनकर माँ हैरान और खुश हुआ। सान्य ही रोहन ने कहा की "मुझे बहुत इच्छा है की मैं एक पैलट बनू लेकिन मुझे डर लगता है।" "डर? क्यु बेटा?" माँ ने रोहन से पूछा। रोहन को अपने आप पर ही शक था की क्या वह ये कर पाएगा। रोहन अपनी पढाई में बहुत पीछे था तो उसे लगता है की वह अपना सपना पूरा नही कर सक्ता है। सान्य ही रोहन बहुत शर्मीला भी था। उसे लोगो से बात करने मे दिक्कत होती थी।

माँ ने उसे उमीद दिया की तुम तुम्हारे लक्षय तक पहुच ~~जाऊँगा~~ जाओगे। "बेटा रोहन तुम ये कर सक्ते हो तुम्हारी अंतर उसकी काबीलियत है। तुम तुम्हारे डर को हरा दोगे। मुझे तुम पर यकीन है।" माँ की बाते रोहन को थोडा आत्मविश्वास दिया।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

स्कूल में भी शेहन सब चीजों से दूर भागता था। उसका कोई खास दोस्त भी नहीं था स्कूल में। शेहन किसी को भी पंसद नहीं आता था। क्युंकि वह बहुत शर्मीला था और डरपोक भी। कोई उसे दोस्त बनाना नहीं चाहता था। यह सब बातें शेहन को और भी दुखी करता था। इस वजह से शेहन अपनी अंतर की आत्मविश्वास जो बचा है वह भी खो देता है।

हर दिन स्कूल से आते समय शेहन उदास रहता है। शेहन की डर उसे हर दिन कोई न कोई दुख देता रहता है। "क्या हुआ शेहन क्यु उदास हो?" माँ ने पूछा। आज भी हर दिन की तरह उसने अपनी दुख चुपाकर बोला। "कुछ भी तो नहीं।" शेहन को अब यह आदत हो गई थी। शेहन की इस बरताव से माँ बहुत परेशान थी। वह अपनी पूरी कोशिश करती थी शेहन को समझाने की लेकिन कोई फयदा नहीं हुआ।

सालों बीत गया अब वह समय आ गया है। शेहन अब बड़ा हो गया फिर भी

उसमे कोई बदलाव नही आया। शेहन अपने जिंदगी की पहले कदम रखनेवाला है। अब शेहन ही अपनी जिंदगी तय करनेवाला है। आज वह उन्नीस साल का है। बचपन में उसका पैलट बनने का सपना अभी भी उसके मन मे दबा पडा है। अभी भी उसका डर उस सपने को ढक के रखा है। यहा तक शेहन अपनी माँ की वजह से ही पहुचा है। दो साल पहले बीमारी के कारण उसके पीता ही चला गाया। शेहन की अकेले शेहन की देखभाल कर रहा है। पर कब तक? उन्नीस साल शेहन को समझाने की कोशिश की फिर भी उसका डर कम नही हुआ। माँ को शेहन के बारे में बहुत चिंता होती है की वह नही है तो शेहन अकेले क्या करेगा।

शेहन को मजबूरी से माँ ने पैलट बनने केलिए पढाई करने केलिए भेजा। शेहन भी पैलट बनना चाहता है पर उसे डर लगता है। आज से शेहन को अकेला पढना था क्युकि शेहन की माँ अकेला ही थी शेहन के फीस भरने केलिए जो वह अकेले नही

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

कर सक्ती। शेहन को पढने केलिए मजबूर हो गया अपने माँ केलिए ताकी वह इतना कम कीस भर सकू। शेहन दिन-रात भर पढने लगा। वह अपना पूरा मन लगाकर पूरी महनत से पढाई की। उसका महनत का फल धीरे-धीरे उसकी रिसल्ट मे दिखाई देने लगा। यह सब देखकर माँ भी बहुत खुश था।

"माँ देखो फिर से मेरा पुरा अच्छे नंबर आये है।" शेहन की बातो मे उसकी खुशी प्रकट था। "मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूँ बेटा। मुझे पता था की तुम सब कुछ हासिल कर लोगे। अब तुम्हे तुम्हारी खूबीयाँ पता चल रहा है न।" माँ केलिए शेहन का प्यार उसकी अंतर की खूबीयाँ बाहर लाई।

ऐसे ही वह अपने अंतर के डर को धीरे-धीरे मिटा रहा था। फिर भी लोगों को सामना करने का उसका डर अभी भी नही गया। उससे कोई दोस्ती करने केलिए आया तो भी शेहन डर से

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തീയതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

उन सबसे दूर भागता है। हर दिन वापस आते समय रोहन से माँ पूछता था की तुम्हे कोई दोस्त मिला? हर दिन का उसका जवाब एक ही था नही।

सब कुछ हर दिन की तरह चल रहा था। लेकिन एक दिन जब रोहन कोलेज जाकर वापस आया तो रोहन की माँ घर पर नही था। माँ काम पर जाकर वापस आने के बाद ही रोहन घर आता था। "माँ, माँ, तुम कहा हो?" रोहन ने चिल्लाया। तभी पडोस का एक व्यक्ती आया और रोहन से बोला की "माँ को असपताल ले गया"। रोहन की माँ घर मे बेहोश पडा था यह देखकर लोगों ने उन्हे असपताल ले गया। सारा बात बताने के बाद पडोसी जलदी ही चला गया क्युकि रोहन वापस कोई जवाब का उमीद उन्हे नही था।

असपताल गया तो डाकट्टर ने रोहन से बताया "माँ को आराम की जरूरत है। उन्हे काम पर मत भेजो वरना उनको बीमारी

बड़ जाएगी"। यह सब सुनने के बाद रोहन ने फैसला लिया की वह माँ को काम पर नही छोडेगा। लेकिन ऐसा किया तो उसे काम पर जाना पडेगा। लेकिन अपने माँ केलिए वह ये करने केलिए तैयार था। रोहन माँ के पास जाकर बैठा। वह नींद में थी। रोहन उन्हे परेशान किए बीना धीरे बोला "माँ कल से मैं आप को काम पर नही छोडूगा। मैं आप केलिए कुछ भी करूगा। आज से मैं डरपोक नही रहूगा। सब लोगो से बातें करूगा। सब मुशकिल का सामना करके अपना सपना सफल करूगा"। माँ यह सब सुन रहा था। उनके आखों से आँसू बहने लगा। रोहन उनके आँसू पोछ दिया और दबाया।

रोहन की हालत उसे निडर बनने की ताकत दी और माँ की प्यार भी। अगले दिन से रोहन पढाई के साथ-साथ ~~खाना~~ गाड़ी चलाने का काम भी शुरू किया। दिन में रोहन पढाई करता था और रात को काम

केलिए जाता था। एक दिन रात को गाडी चलाते समय वह सो गया था और पेड़ पे जाकर टक्कर मारी साथी ही उसका एक पैर टूट गया। कल उसका सबसे जरूरी पैलट परिक्षा था और अपने सपने तक पहुंच ने की आखरी खतम था।

" हे भगवान मेरे साथ ही ऐसे क्यु होता है। मेने कितने मुशकिलों का सामना करके यहा तक पहुचा था। आज मेरा सारा मेहनत पानी में मिल गया। मेरा सपना यहा खतम हो गया। अब माँ के सामने मे कैसे जाऊगा। बेचारी उनको पता तक नही है। वह मेरी इन्तजार कर रही होगी। अब मेरे जीवन में मुझे करने केलिए कुछ बाकी नही है। अब क्यु जीना। मेरे से किसी को भी कोई फयदा नही है।" यह सब सोच-सोच के वह नींद में डूब गया। उस समय एक सपने जैसा उसके मन अपनी बचपन से आज तक की बातें आया। कल तक वह कैसा था। उसके जीवन में क्या-क्या बदलाव

आया। उसकी माँ की बातें। जो प्रतीक्षा वह रोहन में रखती है। उसकी उम्मीद, सपने, प्यार। रोहन का सपना उसकी, खुशी, दायित्व सब कुछ उसके मन में आया। इन सब सोच से अचानक वह बाहर निकला और फैसला किया की मैं हार नही मानूगा। हर मुशकिल का सामना मैं करूगा। किसी से भी नही डरूगा। कुछ भी मुझे नही रोक सकता। सब चीजों को हराने की ताकत उसके अंतर आ गई थी।

कल का परिक्षा उसने लिखने की फैसला लिया। उसकी डर सब पूरी तरह से मिट गया था। उसने अपनी कुछ नए दोस्तो की मदद् जाकर परिक्षा लिखा। जब रिस्लट आया तो सबसे पहला नंबर रोहन का था। इस समय उसका मन खुशी से नाच रहा था। "माँ यह सुनकर बहुत खुश हो जाएगी। कल मैंने मरना चाहा आज मैं जीना चाहता हूँ। आज मुझे पता चला की हारना मेरे लिए मंजूर नहीं।"